जैवविधिता सूचनाविज्ञान पर कार्यशाला

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में ७ से ९ दिसम्बर, २००४ की अवधि में "जैवविविधता सूचनाविज्ञान भारत-अमरीकी पहल" पर संयुक्त कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य जैवविविधता सूचनाविज्ञान के क्षेत्र में दोनों देशों के मध्य सहयोग और सहभाग के संभावित क्षेत्रों पर चर्चा करना था । इस कार्यशाला में सात अमरीकी प्रतिभागियों और विभिन्न शिक्षा संस्थानों, शोध संस्थानों और सरकारी एजेंसियों का प्रतिनिधित्व करने वाली डेनमार्क की संस्था, ग्लोबल बायोडाइवरसिटी इन्फॉर्मेशन फेसिलिटी (जी.बी.आई.एफ) के एक प्रतिनिधि सहित लगभग कुल पचपन प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

डॉ. शिवराम, निदेशक, एन.सी.एल. ने कार्यशाला के प्रारंभ में अपने उद्‌बोधन में कहा कि जैवविविधता का अभिलेख रखने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए । उन्होंने कहा कि भारत की जैवविविधता जोकि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, के अभिलेखन और संरक्षण की आवश्यकता है । उन्होंने आगे कहा कि "जैवविविधता के ज्ञान का प्रयोग सहयोगात्मक शोधकार्य में किया जा सकता है" ।

डॉ.(सुश्री) मेरडीथ लेन, सम्पर्क अधिकारी, जी.बी.आई.एफ., कोपनहेगन, डेनमार्क ने अपने मुख्य संबोधन में जैवविविधिता की जानकारी के अच्छे प्रबन्धन हेतु सूचना प्रौद्योगिकी की पहल की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने वैश्विक, क्षेत्रीय तथा कुछ राष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने जी.बी.आई.एफ. के उद्‌भव तथा कार्यप्रणाली के बारे में भी जानकारी दी ।

सुश्री ग्लेडीस कॉटर, प्रमुख अमरीकी प्रतिनिधिमंडल तथा ऐसोसिएट मुख्य जीववैज्ञानिक (सूचना) अमरीकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने भविष्य में जैवविविधिता सूचनाविज्ञान के इस उभरते हुए क्षेत्र में भारतीय सहयोगियों के साथ मिलकर कार्य करने की आशा व्यक्त की ।

इस कार्यशाला को सात विषय-वस्तुओं में विभाजित किया गया था । इसमें इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक-सूची तथा कम्प्यूटरचालित वर्गीकरण-विज्ञान, संरक्षित क्षेत्र, जैविक संग्रहणों का अंकीयन, आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ, जी.आई.एस. सुदूर संवेदन एवं सजीव कल्पना, (विजुअलाईजेशन) अंतराल विश्लेषण (पारिस्थितिकी), वनस्पति मानचित्रण तथा भूमि प्रयोग इतिहास का विश्लेषण और मेटा-डेटा, सूचीकरण एवं संग्रहण नामक विषयों पर सत्र चर्चा आयोजित की गई थी ।

इस कार्यशाला का समापन जैवविविधिता सूचनाविज्ञान पर एक संयुक्त वक्तव्य से हुआ जिसमें दो राष्ट्रीय जैवविविधिता वाले समुदायों के बीच निरन्तर रूप से सहयोग करने का समर्थन किया गया । उक्त कार्यशाला में समान हितों की भी पहचान की गई और यह विचार व्यक्त किया गया कि संसाधनों, निधि जुटाने तथा अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप कार्य के माध्यम से हमारे सहयोग का विकास होगा ।

ये वचनबद्धताएँ निम्न प्रकार हैं :-

* हम यह जानते हैं कि हमारे हित तथा लक्ष्य समान हैं और हम सहभागिता एवं एक दूसरे से सीखने के लिए अवसर निर्माण करने के इच्छुक हैं ।

* हम यह विश्वास करते हैं कि राष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयासों से जैवविविधिता संरक्षण में वैज्ञानिक ज्ञान एवं समझ तथा वैश्विक उद्देश्यों में सहयोग प्राप्त होगा ।

* राष्ट्रों के बीच करार प्रस्थापित करने हेतु हम प्रत्येक देश में एजेंसियों के बीच सहयोग तथा दोनों देशों में मिलकर कार्य करने की अपेक्षा करते हैं ।

* विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए तथा उसके स्रोत खोलने और उसे जनता तक पहुँचाने के लिए हमने वैज्ञानिक आँकड़ों एवं सूचना में भागीदारी के महत्त्व की सामान्य पहचान की है ।

* समुदाय के सभी सदस्यों की इसमें सहभागिता तथा अपनी इच्छा से संसाधनों में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए हम हमेशा उन्हें श्रेय एवं मान्यता देने हेतु बचनवद्ध हैं जो अपनी बौद्धिक सम्पदा का योगदान देते हैं ।

* प्रभावी सहयोग तथा मजबूत द्विपक्षीय सम्बन्ध मूलतः वैज्ञानिकों एवं संस्थाओं के अच्छे कार्य पर निर्भर करते हैं और हम विशाल स्तर पर सहभागिता को बढ़ावा देना चाहते हैं ।

* जैवविविधिता सूचना-विज्ञान को समझने और उसे उन्नत करने हेतु हमें विशेषज्ञता की जटिलत को अपनाना होगा तथा जीवविज्ञान, वर्गीकरण विज्ञान, जैवप्रौद्योगिकी, परिस्थिति-विज्ञान, रसायनविज्ञान, प्रतिरूपण एवं अनुरूपण, गणित, भूगोल, कम्प्यूटर विज्ञान, पुस्तकालय एवं सूचनाविज्ञान जैसी बहुविधाओं को सम्मिलित करने की आवश्यकता है तथा उनके परस्पर समन्वयन के लिए कार्य करना होगा ।

* हमारे द्विपक्षीय सम्बन्धों का लाभ हमारी राष्ट्रीय (एम.बी.आई.आई,एन.सी.एल जैवविविधिता सूचनाविज्ञान केन्द्र) तथा क्षेत्रीय (सैकनेट, पीबीआईएफ) , एवं वैश्विक (परिस्थिति विज्ञान एवं जैवविविधिता पर विश्व डेटा केन्द्र, जीबीआईएफ) अवसंरचना को मिलना चाहिए ।

इन वचनबद्धताओं को प्राप्त करने हेतु कार्यशाला ने निम्नलिखित कार्रवाई की सिफारिश की :-

* जैवविविधिता सूचनाविज्ञान पर हमारे दो राष्ट्रों के बीच औपचारिक सहमति का समर्थन पूरा करना ।
* सहयोग एवं विशिष्ट संयुक्त प्रायोगिक परियोजनाओं हेतु संयुक्त कार्य योजना विकसित करना ।
* समान हितों के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए जैवविविधिता सूचना में कार्यक्रम की राष्ट्रीय स्तर की सूची विकसित करना ।
* निजी स्तर पर आदान-प्रदान तथा परस्पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रति वचनबद्धता ।
* भारत-अमरीका फोरम तथा डीएसटी-एनएसएफ जैसी निधि प्रदान करने वाली संस्थाओं के साथ सहयोग करते हुए संयुक्त प्रस्तावों को बढ़ावा देना ।